International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(5): 196-198

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(5): 196-198
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-07-2021
Accepted: 12-08-2021

डॉ. जया शुक्ला
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत, पालि एवं प्राकृति विभाग, रा.दु.वि.वि., जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. जया शुक्ला
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत, पालि एवं प्राकृति विभाग, रा.दु.वि.वि., जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सुधाकर शुक्ल कृत देवदूतम् में राष्ट्रीय-चेतना

डॉ. जया शुक्ला

प्रस्तावना

मध्यभारत के प्रसिद्ध मूर्धन्य भावयोगी रचनाधर्मी पं0 सुधाकर शुक्ल ने हिन्दी-संस्कृत भाषा के माध्यम से विविध विधाओं में साहित्य सर्जन किया। श्री शुक्ल जी के विशाल संस्कृत साहित्य में महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, स्तोत्रकाव्य, नाटिका, सूत्रोपनिषद एवं काव्य है। देवदूतम् खण्डकाव्य दिव्य जीवन मूल्यों का प्रेरणा स्रोत है, इसके पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्ध दो भाग हैं। देवदूतम् का पूर्वार्द्ध भारतीय राष्ट्रीयता की रक्षा का मातृभूमि की सुरक्षा का आह्वान है एवं देवदूतम् का उत्तरार्ध लोकहित एवं राष्ट्र कल्याण से ओतप्रोत है साथ ही वर्तमान समस्याओं के प्रति जागरूक होकर समाधान भी प्रस्तुत करता है।

राष्ट्र देशव्यापी संगठन का समष्टि रूप है। इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि भूमिपूजन, प्रभुसत्ता और स्वशासन का समष्टि रूप राष्ट्र है। प्रत्येक जागतिक पदार्थ में पाँच तत्त्व हमेशा विद्यमान रहते हैं- नाम, रूप, सत्ता, चेतना और आनन्द। इनमें नाम व रूप भौतिक पदार्थ हैं वहीं सत्ता, चेतना एवं आनन्द आध्यात्मिक तत्त्व हैं। इसमे चेतना तत्त्व रूप व नाम को चैतन्य बनाता है। यदि चेतना जागृत है तो नाम, रूप, सत्ता एवं आनन्द सभी प्रकाशक, तेजस्वी, उर्जस्वी बन जाते हैं, अतः राष्ट्र चेतना राष्ट्र के समग्र अस्तित्व के जागरण की ऊर्जा है, प्रकाश है।

राष्ट्रीय-चेतना

श्री सुधाकर शुक्ल जी संस्कार, संस्कृति और संस्कृत के प्रबल पक्षधर हैं एवं तेजस्वी, ओजस्वी रचना धर्मी कवि होने के नाते गति और मति के अनुरूप उन्होंने भी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना योगदान दिया और ग्रामीण क्षेत्रों में राष्ट्र चेतना के जागरण में सक्रिय भाग लिया और उनमें काव्यांकुरण पराधीन भारत में ही होने से इसका प्रभाव उनके साहित्य में परिलक्षित होता है। स्वतंत्र राष्ट्र की रक्षा का दायित्व भारत के स्वतंत्र नागरिक का है। श्री शुक्ल जी अपनी मातृभूमि से पोषित भारतीयों का आह्वान करते हैं कि अपने प्रियदेश की राजलक्ष्मी मानमर्यादा तथा श्री सम्पन्नता की रक्षा के लिए खम्ब बनकर खड़े हो जावें। श्री शुक्लजी भारतभूमि के उपकारों का स्मरण कराते हुए कहते हैं-

'यस्यां भुवयभ्यहृतरसाः हन्त खेलन्ति मत्र्या
स्तद्वैक्लव्येऽपि यदविकलाःल्कैत्यमिव्यसह्यम्।
तत्वेतस्य स्वविषयचरा भारतस्याश्रयः स्युः
स्तम्भाः दम्भोछलनमनसा प्रद्विषाभप्यजस्त्रम्।।'[1]

अथर्ववेद का पृथ्वीसूक्त वैदिक आर्यों के राष्ट्र-प्रेम का समुज्जवल प्रतीक है। इस पूरे सूक्त(अथर्व 12 काण्ड, 1 सुक्त) में पृथ्वी के स्वरूप का वर्णन देशभक्ति का परिचायक है। इस सूक्त के 63 मन्त्र में मातृभूमि को मातृरूपिणी मानकर समग्र पार्थिव पदार्थों की जननी तथा पोषिका के रूप में उद्घोषित किया है एवं प्रजा को समस्त बुराइयों, क्लेशों तथा अनर्थों से बचाने तथा सुख-सम्पत्ति की वृष्टि करने के लिए भव्य प्रार्थना की है-

'याभष्विनावभिभातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमें
इन्द्रो यां चक्र आत्मनेऽनमित्रां शचीपतिः।।
सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः।[2]

अर्थात् जिसे अश्विन ने नापा, जिस पर विष्णु ने पादप्रक्षेपों को रखा, जिसे सामथ्र्य के स्वामी इन्द्र ने अपने लिए शत्रु रहित बनाया, वह भूमि मुझे इसी तरह दूध दे जिस प्रकार माँ अपने बेटे को दूध पिलाती है।

वेदों में जिस मातृभूमि माँ से प्रार्थना की गई है। जो कि सही है क्यूंकि जिस पृथ्वी पर जिनका निवास है वे जन पृथ्वी को पूजनीय माता के रूप में देखते हैं तो यह स्वाभाविक ही है, वही पृथ्वी उनके भोग-विलास, सुख-समृद्धि की जननी है। उसी पृथ्वी मातृभूमि के लिए श्री सुधाकर शुक्ल तन-मन-धन न्यौछावर करने को कहते हैं। धरतीमाता के महान उपकारों का स्मरण करते हुए भारतवासियों में प्रत्युपकार की मार्मिक भावना का जागरण करने की भावना से श्री शुक्लजी कहते हैं-

''धिग्विष्ठामिर्मलिनयसियां मूत्रकैरप्यजस्रं
यस्या वक्षश्छयहि च विदयम्पाद-घातैश्क्षमायाः।
वस्याः शेषे वयसि यशसा योषिता च त्वमड्.के
त्वत्तस्तया उपकृति-रसः को नु सर्वसहायाः।।''[3]

भारतवर्ष की अखण्डता एवं देशप्रेम विष्णुपुराण में अपनी अभिव्यक्ति पा रहा है। देवता भारतवासियों की धन्यता के गीत गाते हैं, क्योंकि यह भारत देश स्वर्ग तथा मोक्ष पाने का सुखद पथ है तथा देवता होकर भी यहाँ जन्म लेकर मानव अपने परम कल्याण का सम्पादन करता है-

'गायन्ति देवाः खलु गीतकानि धन्यास्तुते भारतभूभिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरूषाः सुरत्वात्।।''[4]

भागवत के शब्दों में स्वर्गलोक में कल्प की आयु पाने की बजाय भारतवर्ष में क्षण भर की आयु पाना श्रेयस्कर है, क्योंकि इस कर्मभूमि में किए गए कर्मों का सन्यास कर मानव भगवान नारायण के अभयपाद को सद्यः प्राप्त कर लेता है-

'कल्पायुषां स्थानजयात् पुनर्भवात क्षणायुषां भारतभूजयोवरम्
क्षणेन मत्र्येन कृतं मनस्विनः संन्यस्य संयान्त्यभयं पदं हरेः।[5]

विष्णुपुराण एवं भागवत की अभिव्यक्ति भावप्रवण कवि की निश्चित रूप से है और यही भावना देवदूतम में भी व्यक्त हुई है। सुधाकर शुक्ल जी कहते हैं कि भारतभूमि पुण्यभूमि है, कर्मभूमि है इसी पर अर्जित किया गया पुण्य स्वर्ग का सुखभोग है। भारत वह भूमि है जहाँ सतत् सुकृत कर्म की साधना सम्पन्न की जाती है और ऐसे सत्कर्मों के लिए निरन्तर यत्न करते रहने की पुरूषार्थ भूमि भारत है। श्री शुक्लजी कहते हैं-

'जानाम्येततत्स्वरिति भवताम्भोगभूरभ्रमम्भोः।
कर्माधीनम्फलमिह जनैर्नाम बोभुज्यते च।
तत्राप्यत्र प्रिय! सुकृतये सर्वकालं यतेथाः।
यत्नः प्रौढ़ः फलति यदुदन्वज्जल ज्वालनेऽपि।।[6]

पुराणों में भारतभूमि कर्मभूमि तपःभूमि है कहा गया है वहीं भावयोगी श्री शुक्ल जी कहते हैं कि भारतभूमि तपस्या और साधना की पावन मंगलभूमि है जहाँ पर मानव साधना के बल पर पुण्यात्मा देवयोनि को प्राप्त करते हैं-

कर्मक्षेत्र न किमसुलभञ्जन्म चैव द्विजातौ
तेऽयुत्कृष्टव्रतयमदभैदेवयोनिं लभन्ते।
अङ्गीकुर्वन्त्यमर-निकराः सङ्गतिम्मङ्गलानां
प्रायः पुण्यप्रवणमनसां वृत्तिरन्यप्रियाय।।[7]

अपने राष्ट्र के प्रति गौरव की अनुभूति राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति ही तो प्रदर्शित करता है। शुक्लजी देवदूतम में कहते हैं कि निसर्ग, निर्मल, गन्धवती भारतभूमि ही सम्पूर्ण संसार की विद्यागुरू है- सारे विश्व में ज्ञान की ज्योति सर्वप्रथम भारत ने ही जलाई है-

गच्छ स्वच्छ प्रकृतिपटलन्तत्पटोर्गन्धवत्या,
यत्र ज्ञान प्रथमकिरणः कारणं ध्वान्तहानेः।'[8]

कोई पुत्र अपनी माँ के प्रति जो निर्मल भाव रखता है, उसके दुःख व कष्ट को पुत्र सहन नहीं कर सकता वही भाव राष्ट्र के लिए, भारतभूमि के लिए एवं भारतभूमि में रहने वालों को अपमान जनक स्थिति में आक्रमणकारी न डाल पाएँ उसके पूर्व ही उनको समूल नष्ट करने का आह्वान श्री शुक्ल जी करते हैं-

''गोत्र-ग्रन्थिं श्लथ्यसि पुनर्वाट्टहासः प्रकृत्याः
कैलासस्ते गिरिशलसितः पक्षमानक्षिलक्ष्यः।
चक्रे धृत्वा स्वदशवदनान्युच्चमच्चन्द्रहासो
रूद्रं रक्षः पतिरूपहरन्कन्द्कक्रीड-मीडाम्।।''[9]

भारत की गरिमा का प्रतीक कैलाश पर्वत को आक्रान्त करके चीनियों की विशाल सेना ने बाधा पहुँचाई है। इसका कष्ट कवि के इस कथन में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो रहा है-

'तच्चाक्रम्य व्यथयति गिरिन्नातिदूराद् दुरात्मा
यच्चीनानामुपचित- चम्रिवण्णसानाङ्कतघ्ना
विघ्नायैव प्रिय-सुरहित-त्राणकृदभूसुराणा
मेषा शेषा न भवतु भुवित्वन्तथैतद्यतेथा।।'[10]

देवदूतम् में राष्ट्रीय भावना प्रखरता के साथ व्यक्त की है। शुक्लजी राष्ट्र के अहितकर किसी भी कार्य व विचार को राष्ट्र द्रोह की संज्ञा देते हैं उसे अक्षम्य मानते हैं और राष्ट्र विरोधी कार्य-विचारों के पक्षधरों का सामाजिक बहिष्कार करने का कठोर परामर्श देते हुए कहते हैं-

नेत्थम्भूतः क्वचिदपि जनः केनचिन्मर्षणीयो
यस्यापि स्यातकृति-रपकृतौ चिन्तनम्वा स्वभूमेः।
राष्ट्रस्य द्विड्भवति स खलो रौरवस्याधिकारी
त्यादिस्त्रोत स्तृणमिव नुदेन्तद्रिपुम्भद्रभावः।।[11]

राष्ट्रभूमि की भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ गुण स्वीकार करते हुए श्री शुक्ल जी की दृष्टि में अपने राष्ट्र में भव्यभाव से निष्ठा और भक्ति न रखने वाले महान् विद्वान की अपेक्षा अपनी मातृभूमि के चारूचरणों में भक्तिपूर्वक नमन करने वाला राष्ट्र भक्त विशिष्ट गुणों से युक्त न हो फिर भी वह वन्दनीय है- सम्मानीय है- पूज्य है-

''स भ्राष्टं यात्वधिगुणयुगप्येष चेन्न स्वराष्ट्रं[a]
भव्यैर्भावैस्तदभिभजते निष्ठयाधिष्ठितश्च।
अज्ञाऽपिज्ञस्स सकलकलो निष्कलोऽपि स्वभूमौ
भक्तिव्यक्ती कृतनतिरपि व्युदगुणाऽप्यर्चनीयः।।''[12]

निष्कर्षः-

उपर्युक्त राष्ट्रीय भावना से आप्लावित उद्धरणों से स्पष्ट हो जाता है कि मानव जीवन की सार्थकता राष्ट्रप्रेम में ही है ऐसा मानने वाले श्री शुक्ल जी राष्ट्र-चेतना के जागरण के सफल कवि हैं। राष्ट्रभूमि-मातृभूमि की समृद्धि एवं वैभव के गायक हैं। मातृभूमि की पावनता के वह उपासक हैं और मातृभूमि के प्राकृतिक सौन्दर्य और सामर्थ्य के अभिभावक हैं। मातृभूमि के विशद दर्शन के प्रति उनकी विशेष अभिरूचि है। राष्ट्र-चेतना की दृष्टि से श्री शुक्ल जी राष्ट्रधर्मी कवि हैं जिनके काव्यसंसार का इष्ट देवता राष्ट्र हैं। इष्टदेवी मातृभूमि है। वन्दनीय राष्ट्र भक्त है। पूजनीय देवभाषा, राष्ट्रभाषा है। मान्यधर्म-मानवता है। सांस्कृतिक-राष्ट्रीय स्थल-तीर्थस्थल हैं। अतः देवदूतम् में श्री शुक्ल जी की राष्ट्रीय चेतना की शुचिता का प्रखर उद्घोष है।

संदर्भ

1. देवदूतम् पूर्वार्ध-36
2. अथर्ववेद-12-1-63
3. देवदूतम् उत्तरार्ध-17

4. विष्णुपुराण-2-3-25
5. भागवत्-5-19-23
6. देवदूतम् पूर्वार्ध-7
7. देवदूतम् पूर्वार्ध-5
8. देवदूतम् पूर्वार्ध-20
9. देवदूतम् पूर्वार्ध-22
10. देवदूतम् पूर्वार्ध-23
11. देवदूतम् उत्तरार्ध-36
12. देवदूतम् उत्तरार्ध-40